भारत बनाम इंडिया

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

भारतवर्ष के लिए इंडिया नाम भी प्रयुक्त किया जाता है। विदेशी लोग तो प्राय: इंडिया शब्द का ही प्रयोग करते हैं किंतु समझ में नहीं आता कि भारतीय लोग इंडिया का प्रयोग क्यों करते हैं? वास्तव में भारत के लिए इंडिया ही नहीं हिंदुस्तान भी प्रयुक्त होता है। प्राचीन काल में आर्यावर्त नाम भी इस्तेमाल होता था। भारत स्वदेशी और वास्तविक नाम है तो इंडिया शब्द 'हिंदिका' शब्द से बना है जो पश्चिम अथवा यूरोप से होता हुआ आया है। वस्तुत: यह आयातित शब्द है जिसमें विदेशी भाषा अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी मानसिकता छाई हुई मिलती है। हिंदुस्तान फारस और अरब से हो कर आया है। मध्य काल में यह 'हिंदुस्तानी' नाम गंगा-जमुनी तहज़ीब का प्रतीक हो गया, भारत केवल भूखंड का नाम नहीं वरन इस देश की संस्कृति, समाज और परंपरा से जुड़ा हुआ है।

वास्तव में भारत नाम का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में पुरू, यदु, तुरवश, द्रुहयु और अनु पाँच मुख्य आर्यजन के नाम आते हैं। इनमें पुरुओं की तीन शाखाएँ हुईं – भारत, तृत्सु और कुशिक। इन्हीं भरत राजाओं की वजह से भारत नाम पड़ा। इनमें दिवोदास और उसका पुत्र सुदास ऋग्वैदिक काल के प्रसिद्ध राजा हुए जिन्होंने जनपदों के छोटे-छोटे राजाओं या राजकों को संगठित करने का कार्य किया। इसी प्रकार शकुंतला और राजा दुष्यंत के पुत्र भरत का नाम भी जोड़ा जाता है। इस तरह 'भारतों' के नाम से भारत नाम पड़ा। ऋग्वेद के प्राचीनतम ऋषि विश्वामित्र अपनी एक ऋचा में इंद्र से प्रार्थना करते हैं –

य इमे रोदसी उभे अहभिन्द्रम तुषट्व:।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रहमेदं भारतं जनं॥ (3.53.12)

अर्थात हे कुशिक प्रभो, ये जो दोनों आकाश और पृथ्वी हैं, इनके धारक इंद्र की मैंने स्तुति की है। स्तोता विश्वामित्र का यह स्तोत्र भारतजन की रक्षा करता है।

प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में 'सप्तसिंधु' नाम भी कई बार आया है। इसका प्रयोग क्षेत्र-विस्तार के संदर्भ में हुआ है। यह अनेक जनपदों का मिला-जुला नाम है जिसका भूभाग गंगा से ले कर सिंधु नदी घाटी और उत्तर में हिमालय से ले कर दक्षिण में राजस्थान तथा गुजरात तक फैला हुआ है। ऋग्वेद में दो ऋचाओं (10.75.5.6) में उन्नीस नदियों का उल्लेख मिलता है जिनसे इस क्षेत्र की सिंचाई होती थी। एक ऋचा (1.35.8) में सोने की आँखों वाले सविता देव *(हिरण्याक्ष: सविता देव:)* को सप्तसिंधु की संज्ञा दी गई है। यही सप्तसिंधु देश का पर्याय है, किंतु भारत तो कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से मिज़ोरम तक फैला हुआ है। हमारी पहचान तो भारतीयता के आधार पर है। इसी प्रकार आदि काल में 'राष्ट्र' और 'देश' अर्थात भारत एक ही पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते थे। ऋग्वेद में ही राष्ट्र शब्द भारत के संदर्भ में मिलता है – *त्वत राष्ट्र माँ आधी भ्रंशत (10.173.1)।* इस पूरी ऋचा की व्याख्या की जाए तो यह भाव मिलता है - हे राजन! हमारे राष्ट्र का तुम्हें स्वामी बनाया गया है। तुम हमारे राजा हो। तुम

नीति, अचल और स्थिर हो कर रहो। सारी प्रजा तुम्हें चाहे। तुमसे राष्ट्र नष्ट न हो पावे। इस प्रकार भारत को कई नामों से अभिहित किया गया है, लेकिन भारत का प्रयोग ही अतीतकालीन, प्राकृतिक और स्वाभाविक है।

आज के परिप्रेक्ष्य में भारत और इंडिया का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो भारत नाम भारत की धरती का होने के कारण स्वाभाविक और औचित्यपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुड़ा हुआ है। इंडिया में पाश्चात्य संस्कृति की गंध आती है। भारत राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद के मंत्र की पूजा करता है जबकि इंडिया की नज़र में राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता एक पुराणपंथी अवधारणा है। यह राष्ट्रवाद को पंथनिरपेक्ष अर्थात सेकुलर नहीं मानता और इसी कारण राष्ट्रवाद को प्रगतिशील भी नहीं मानता। भारत स्वतंत्रता का प्रतीक है तो इंडिया गुलामी का। भारत में देश की अखंडता और एकात्मकता के बीज अंकुरित हैं जबकि इंडिया में विभाजन की जड़ों को पकड़ने की कोशिश होती है। भारतवासियों के लिए भारत उनकी माता है और वे अपने को उसका पुत्र मानते हुए उसका नमन करते हैं – पृथिव्या पुत्रोह, जबकि इंडिया हमारे भीतर संबंधों में परायापन की भावना पैदा करता है। भारत आर्य, द्रविड़, नाग, यक्ष, किन्नर, किरात, मंगोल, मुस्लिम, ईसाई, पारसी आदि अनेक जातियों को अपने सीने से चिपका कर उन्हें स्नेह, प्रेम और वात्सल्य की छाया देता है और इंडिया एवं हिंदुस्तान इन जातियों को अलग-अलग करने के लिए उकसाता है। भारत हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिख आदि मतों को एक ही वृक्ष की शाखाएँ मानता है जबकि इंडिया इन्हें अलग-अलग समुदाय और उससे भी आगे बढ़ कर उन्हें संप्रदाय मानता है। भारत हमें अहिंसा पर विश्वास करने और उसका अनुगमन करने का पाठ पढ़ाता है जबकि इंडिया हिंसा की ओर धकेलता है। भारत ऋषि-मुनियों का देश लगता है जबकि इंडिया विलासियों और हिप्पियों का देश लगता है। भारत हमें साधना की ओर प्रोत्साहित करता है तो इंडिया साधनों के पीछे पड़ा रहता है। भारत सौहार्द्र, मैत्री, त्याग और वसुधेव कुटुंबकम का पाठ सिखाता है जबकि इंडिया इनसे हमें दूर रखने का प्रयास करता है। भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपरा, भारतीय साहित्य, भारतीय जीवन, भारतीय पुराण और इतिहास, भारत की विकासशीलता आदि भारत की अस्मिता और पहचान है जबकि इंडिया इन सबको अपने भीतर समेट नहीं पाता। एक अन्य बात उल्लेखनीय है कि सत्यमेव जयते हमारे देश भारत का प्रतीक वाक्य है जो मुंडक उपनिषद से उद्धृत है और यह वाक्य भारतीय विचारधारा को ही उद्घाटित करता है। भारत पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों की पूजा करता है, इसीलिए वह गाय और तुलसी को माता की पदवी देता है। वह गाय की रक्षा करता है जबकि इंडिया उसके भक्षण के लिए लालायित रहता है। भारत गांवों के अतिरिक्त शहरों में भी निवास करता है जबकि इंडिया केवल शहरों में रहता है। भारत अमीरों और गरीबों को समान नज़र से देखता है जबकि इंडिया अमीरों को ही निहारा करता है। भारत भारतीय वस्त्र, खान-पान और जीवन-शैली की पहचान है और इंडिया विदेशी वस्त्र, खान-पान और जीवन-शैली को अपनाने में अपनी शान समझता है। भारत अपनी भाषा हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को अपने भीतर आत्मसात किए हुए है जबकि इंडिया अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ियत के गीत गाता रहता है।

भारत के विकास और आधुनिकीकरण के लिए इधर नई-नई परियोजनाएं बनाई जा रही हैं और उन्हें मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्ट-अप इंडिया, डिजिटल इंडिया आदि अंग्रेज़ी के जोरदार नारों से सुसज्जित किया जा रहा है। अंग्रेजी में दिए गए इन नारों से इंडिया के विकसित और आधुनिक होने की आशा तो है लेकिन यह पश्चिमीकरण, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से अवश्य प्रभावित होंगे। ऐसे इंडिया में विलासिता, भौतिकता, स्वार्थपरकता और परायापन के साम्राज्य की भी संभावना है। साथ-साथ भारतीयता, आध्यात्मिकता, अपनापन और सांस्कृतिक चेतना के दर्शन न होने की पूरी-पूरी आशंका है तथा ग्रामीण जीवन के प्रति संवेदनहीनता के संकेत भी मिल सकते हैं। हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं में ये नारे हमारी मानसिकता में परिवर्तन लाने में सहायक हो सकते है जो भारत को विकसित और आधुनिक राष्ट्र बनाने में सहायक हो सकते हैं।

अत: भारत को भारत ही रहने दो, इंडिया नहीं। भारत नाम में ही महानता है और यही हमारी पहचान है। यही हमारी अस्मिता है। जय भारत।